

## \* श्री सभ्यं वंदना \*

मान्त सभ्यिन्, सताहित नितः-आसीनं विरासनम्-  
नभविदेही, अवधूत द्विगभर-श्रीगुरुमूर्ति गणननम्-  
गुरुदेवदत्तगणननम्.... ॥४०॥

सभ्ययोगी, उपाधिरहित-वेदादि दोषविवर्णितम्-  
निजनन्द निरपेक्ष आत्मन्-श्रीगुरुमूर्ति गणननम्-  
गुरुदेवदत्त गणननम्.... ॥४१॥

प्रयंड तेज, अण्ड लजनम्-परात्पर तुर्यातीतम्-  
प्रगट सिद्ध, अवतार पूर्यम्-श्रीगुरुमूर्ति गणननम्-  
गुरुदेवदत्त गणननम् ॥४२॥

सत् यित्त आनंद, अक्षरुप-मुनि श्रेष्ठ सुरगण्य वंदितम्  
परमात्मपद, अपिनाशः दर्शन...श्रीगुरुमूर्ति गणननम्  
गुरुदेवदत्त-गणननम् ॥४३॥

ॐ गुरु, अक्षांड नायक-परमत्व सुशोभितम्-  
परिनाथरथ नाथ, स्वामी-श्रीगुरुमूर्ति गणननम्  
गुरुदेव दत्त गणननम्....॥४४॥

(सवार-सांज आरती पछी)

卐 卐 卐

विजय घोष

अनंत केटी अक्षांड नायक महाराजधिराज योगीराज-  
परअक्ष सच्चिदानंद लकत प्रतिपालक सभ्यं सद्गुरु  
श्रीभद्र गणननाडवधूतो विजयतेत राम०

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

卐